दृष्टि

साहित्य , कला, मनोरंजन

हिंदी क्लब ऑफ इलिनॉय की मासिक पत्रिका | प्रथम वर्ष | अंक ९ | सितम्बर २०२२

सम्पादकीय -हिंदी दिवस

समग्र -ज़्यादा देर नहीं लगती

पुस्तक समीक्षा

दृष्टि

हिंदी - क्लब ऑफ इलिनॉय की मासिक
पत्रिका अंक ९ | सितम्बर २०२२

हिंदी क्लब टीम

गुरबचन कौर "नीलम" (संस्थापिका/अध्यक्ष)
उषा कमारिया (सह - संस्थापिका)
विजय चोपड़ा (सचिव)
शिखा मेहता (सह सचिव)
मीता सेवकरमानी, ESQ (कानूनी सलाहकार)

संपादक

मनीष श्रीवास्तब

संपादकीय सहयोग

मेधावी मालवीय
डा. निशा पांड्या
शिखा मेहता

सलाहकार समिति

श्री वीरेंद्र कुमार यादव, पटना (अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद्, भारत)
डा. संजीव कुमार, नई दिल्ली (इंडिया नेट बुक्स प्रा. लि.)
श्री केशव राय, मुंबई (विश्व हिंदी अकादमी)
शैलेन्द्र गर्ग (लेखक, सदस्य हिंदी क्लब ऑफ़ इलिनॉय)
डा. दीपक पाण्डे, नई दिल्ली (सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रतिनिधि मंडल

डा. प्रतिभा फडके, ओहायो प्रतिनिधि
शिखा मेहता, इलिनॉय प्रतिनिधि

आवरण चित्र

धर्मेन्द्र राठौर, भारत

डिजाईन एवं मल्टीमिडिया

पश्चिम मीडिया एंड पब्लिकेशन्स
www.thepashchim.com
info@thepashchim.com

हिंदी क्लब ऑफ़ इलिनॉय

2545 W Devon Ave, Chicago, Illinois
60659 USA
www.hindiclub.org
email - drishti@hindiclub.org

इस अंक में

१.परिचय

सम्पादकीय		मनीष श्रीवास्तव	१
अध्यक्ष कि कलम से		गुरबचन कौर नीलम	२

२. साहित्य

धरोहर	शक्ति या सौं दर्य	रामधारी सिंह "दिनकर"	३
कविता	तिरंगा प्या रा	डा. प्रभा पन्त	४
कविता	'ए ट्रूली ब्यूटीफुल मा इंड' पढ़ाते हुए	मेधा झा	५
ग़ज़लें	दो ग़ज़लें	विज्ञान व्रत	६
लघु कथा	एक जैसे दुःख	महेश केसरी	७
आलेख	लोकशाही	जयश्री बिरमी	८
व्यंग	अलमारियों की दुनिया	राम स्वरुप दीक्षित	१०
कहानी	चरित्र प्रमाण पत्र	नितिन उपाध्ये	१०
संस्कृति	गंगा कुंड (गांगली)	संजय वर्मा "दृष्टि"	१६
पुस्तक समीक्षा	कुरुक्षेत्र	यशवंत चौहान	१८
पुस्तक समीक्षा	एक गधा चाहिए	प्रो. नव संगीत सिंह	१९
खेल खेल में	गुरबचन का शब्द जाल	गुरबचन कौर "नीलम"	२१
बाल - कविता	सुंदर वन का मेला	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	२२

२. कला

आवरण		धर्मेन्द्र राठौर	२३

३. मनोरंजन

क्या देखें	हाउस ऑफ़ ड्रैगन्स	मनीष श्रीवास्तव	२४

४. अंततः

समग्र	ज़्यादा देर नहीं लगती	सुनयना काचरू	२५
			२६
गतिविधियाँ			२९
जानकारी			३०
शुभ कामनाएं			

14 सितम्बर हिंदी दिवस

"लिखें, बोलें, पढ़ें, हिंदी
तो सप्त सिंधु चढ़े हिंदी"

सम्पादकीय

हजारी प्रसाद द्विवेदी, काका कालेलकर, मैथिली शरण गुप्त और सेठ गोविंद दास के साथ ब्योहर राजेंद्र सिम्हा के प्रयासों से १४ सितम्बर १९४९ के दिन हिंदी को भारत की संविधान सभा द्वारा भारत गणराज्य की दो आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में अपनाया गया था। इस निर्णय को भारत के संविधान द्वारा अनुमोदित किया गया जो २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ था। बाद में पं. जवाहरलाल नेहरू की सरकार ने इस ऐतिहासिक दिन के महत्व को देखते हुए हर साल १४ सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। पहला आधिकारिक हिंदी दिवस १४ सितंबर १९५३ को मनाया गया था। मेरी समझ में हिंदी दिवस का जितना राजनीतिक महत्त्व है उतना सामयिक भी। हिंदी दिवस की स्थापना ही एक जनमानस की भाषा को आधिकारिक रूप में प्रयोग करने के लिए की गयी मुहिम की सफलता को मनाने के रूप में की गयी थी। इस हिसाब से हिंदी दिवस की महत्ता प्रवासी हिंदी भाषियों के लिए तो और अधिक हो जाती है, इसे दूसरे भारतीय सांस्कृतिक महोत्सवों के रूप में ही देखना चाहिए।

विदेशों में रहते हुए प्रवासी हिंदी भाषियों को न केवल इसे व्यावहारिक बनाना चाहिए अपितु रोज़मर्रा के कामकाजों के उपयोग में भी लाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसा हम भारत में करते हैं। अमेरिका में बहुत सी संस्थाएं हिंदी को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु प्रयासरत हैं। यहां बड़े विश्वविद्यालयों में तो हिंदी का अध्यापन होता है किन्तु मिडिल और ऐलीमेन्ट्री स्कूलों में मुझे नहीं लगता कि हिंदी, स्पैनिश और फ्रेंच की तरह एक विकल्प के रूप में उपलब्ध है। विश्व की तीसरी सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषा हिंदी (लगभग ६१ करोड़ ५० लाख) को विदेशों में हमें वो स्थान दिलाना होगा जिसकी वो हक़दार है।

मनीष श्रीवास्तव
मुख्य -संपादक

अध्यक्ष की कलम से

गुरबचन कौर नीलम
अध्यक्ष,
हिंदी क्लब ऑफ़ इलिनॉय

दृष्टि के अगस्त का अमृत महोत्सव विशेषांक बहुत सराहा गया। इसमें बच्चों द्वारा प्रस्तुत वीडियो ने भी अच्छी छाप छोड़ी। आपका प्रोत्साहन हमें अगले अंकों को और भी रोचक बनाने में सहायता करता रहेगा।

हिन्दी क्लब ऑफ इलिनॉय अपना वार्षिक कार्यक्रम हिन्दी दिवस इस वर्ष १७ सितंबर, २०२२ को ऑनलाइन मना रहा है? इसमें बड़ों और बच्चों की भिन्न भिन्न प्रतियोगिताएं होती हैं और सभी विजेता पुरस्कृत भी किये जाते हैं। इस प्रतियोगिता में केवल अमेरिका से ही प्रतिभागी भाग ले सकते हैं। इस पत्रिका के अंत में इसका फ्लायर है। अधिक से अधिक भाग ले कर हिन्दी के प्रचार में अपना योगदान दें।हर अंक में हम बच्चों के लिए शब्द जाल या शब्द खोज का पृष्ठ रखते हैं। आशा करती हूँ आप बच्चों को इसे दें। इससे उनका खेल खेल में हिन्दी ज्ञान भी बढ़ेगा। अगले अंकों में हम बच्चों के लिए और भी सामग्री डालेंगे।

यह अंक कैसा लगा? आपके विचार बहुत आवश्यक हैं पत्रिका को हर माह एक नई ऊँचाई तक ले जाने के लिए।

अगले अंक तक .....

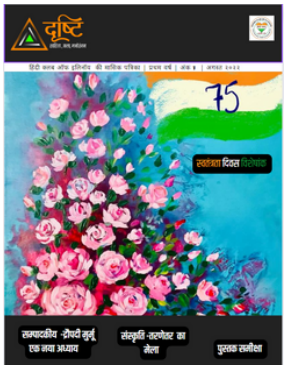

साहित्य

रामधारी सिंह "दिनकर"

शक्ति या सौंदर्य

तुम रजनी के चाँद बनोगे ?
या दिन के मार्त्तण्ड प्रखर ?
एक बात है मुझे पूछनी,
फूल बनोगे या पत्थर ?

तेल, फुलेल, क्रीम, कंघी से
नकली रूप सजाओगे ?
या असली सौन्दर्य लहू का
आनन पर चमकाओगे ?

पुष्ट देह, बलवान भूजाएँ,
रूखा चेहरा, लाल मगर,
यह लोगे ? या लोगे पिचके
गाल, सँवरि माँग सुघर ?

जीवन का वन नहीं सजा
जाता कागज के फूलों से,
अच्छा है, दो पाट इसे
जीवित बलवान बबूलों से।

चाहे जितना घाट सजाओ,
लेकिन, पानी मरा हुआ,
कभी नहीं होगा निर्झर-सा
स्वस्थ और गति-भरा हुआ।

संचित करो लहू; लोहू है
जलता सूर्य जवानी का,
धमनी में इससे बजता है
निर्भय तूर्य जवानी का।

कौन बड़ाई उस नद की
जिसमें न उठी उत्ताल लहर ?
आँधी क्या, उनचास हवाएँ
उठी नहीं जो साथ हहर ?

सिन्धु नहीं, सर करो उसे
चंचल जो नहीं तरंगों से,
मुर्दा कहो उसे, जिसका दिल
व्याकुल नहीं उमंगों से।

फूलों की सुन्दरता का
तुमने है बहुत बखान सुना,
तितली के पीछे दौड़े,
भौरों का भी है गान सुना।

अब खोजो सौन्दर्य गगन–
चुम्बी निर्वाक् पहाड़ों में,
कूद पड़ीं जो अभय, शिखर से
उन प्रपात की धारों में।

सागर की उत्ताल लहर में,
बलशाली तूफानों में,
प्लावन में किश्ती खेने-
वालों के मस्त तरानों में।

बल, विक्रम, साहस के करतब
पर दुनिया बलि जाती है,
और बात क्या, स्वयं वीर-
भोग्या वसुधा कहलाती है।

बल के सम्मुख विनत भेंड़-सा
अम्बर सीस झुकाता है,
इससे बढ़ सौन्दर्य दूसरा
तुमको कौन सुहाता है ?

है सौन्दर्य शक्ति का अनुचर,
जो है बली वही सुन्दर;
सुन्दरता निस्सार वस्तु है,
हो न साथ में शक्ति अगर।

सिर्फ ताल, सुर, लय से आता
जीवन नहीं तराने में,
निरा साँस का खेल कहो
यदि आग नहीं है गाने में।

डा. प्रभा पन्त

विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड), विगत २५ वर्षों से अध्यापन, शोध निर्देशन, गद्य-पद्य विधाओं में लेखन (१७ मौलिक पुस्तकों का प्रकाशन) , राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर काव्यपाठ (ऐतिहासिक मंच लालकिला सहित) व्याख्यान, संयोजन- संचालन
संपर्क - dr.prabhapant@gmail.com

तिरंगा प्यारा

स्वतन्त्र भारत के उन्मुक्त गगन में
पंछी बन उड़ना है मुझे।
मलयगिरि के सुरभित समीर-सम
मन-मुग्ध करना है मुझे।

जलधारा-सम बहती जाऊँ
दोनों कूलों के साथ-साथ
हरदिन, हरपल आज़ादी का
अनुभव करना है मुझे।
स्वतन्त्र भारत के उन्मुक्त गगन में,
पंछी बन उड़ना है मुझे।

इसको-उसको और स्वयं को
व्यथित किये बिना अब तो
मनचाहे परिधान पहनना,
काम करना है मुझे।
स्वतन्त्र भारत के उन्मुक्त गगन में
पंछी बन उड़ना है मुझे।

सफलता के उच्चतम शिखर पर
फहराकर तिरंगा प्यारा
सागर तल का स्पर्श करके,
जाना है अम्बरपार मुझे।
स्वतन्त्र भारत के उन्मुक्त गगन में
पंछी बन उड़ना है मुझे।

स्वस्थ-शिक्षित हो देश मेरा
भूखा नहीं सोए कोई,
भारत माँ के इस स्वप्न को
करना है साकार मुझे।
स्वतन्त्र भारत के उन्मुक्त गगन में
पंछी बन उड़ना है मुझे।

अंग्रेजी साहित्य में एम् ए, प्रकाशित कृतियाँ - एक प्रेम ऐसा भी (कहानी संकलन) दो लघु उपन्यास, यात्रा वृतांत एवम् अन्य कथाएं राष्ट्रीय दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारटाइम्स, दैनिक जागरण, में प्रकाशित अनेक रचनाएँ , वर्तमान में शिक्षण करतीं हैं ।
ईमेल - *medha04@gmail.com*

मेधा झा

'ए ट्रूली ब्यूटीफुल माइंड' पढ़ाते हुए

जब मैं समझा रही होती हूं
जीनियस शब्द का पर्याय,
कुछ नाम कचोटते हैं मेरे मन में,
क्यों नहीं हैं पर्याय इस शब्द के,
भारतीय गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण,
जिन्होंने दी थी चुनौती आइंस्टीन के सापेक्ष सिद्धांत को,
और कक्षा परिचित होती है उस शख्स से भी।

जीवनी लिखते हुए
जब लेखक बता रहा होता है,
गाथा आइंस्टीन के महानता की,
ढूंढती हूं मैं मिलेवा के जीनियस के लिए भी दो शब्द,
प्रेम के दिनों में स्वयं आइंस्टीन ने कहा था
कि यह खोज उन दोनों की होगी।
क्यों मिलेवा ने लिखा अपनी मित्र को -
उन दोनों की सम्मिलित खोज
प्रसिद्ध करेगी उसके पति को।

क्या नोबेल की हकदार वह भी नहीं थी?
क्या उसे श्रेय नहीं मिलना चाहिए
उसके सहयोग का?

विज्ञान व्रत

कला और कविता दोनों के संस्कार बचपन से ही मिले| देश -विदेश की विख्यात कला दीर्घाओं में इनकी पेंटिंग्स का प्रदर्शन, देश की प्रतिष्ठित पत्र -पत्रिकाओं में गजलों का प्रकाशन | गीत और दोहा विधा में भी लेखन | ग़ज़ल सम्राट स्व. जगजीत सिंह इनकी गज़लों को अपना रेशमी स्वर दिया | तमाम पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किये जा चुके हैं| प्रमुख कृतियाँ -बाहर धूप खड़ी है ,चुप कि आवाज ,जैसे कोई लूटेगा ,तब तक हूँ ,महत्वपूर्ण गज़ल संग्रह हैं खिड़की भर आकाश इनके दोहों का संकलन है | संपर्क - vigyanvrat@gmail.com

एक

मैं ठिकाना था कभी
वो ज़माना था कभी

आप मेरी जान थे
ये न जाना था कभी

अब हक़ीक़त हूँ यहाँ
इक फ़साना था कभी

मैं अगर नाराज़ था
तो मनाना था कभी

आपका हूँ या नहीं
आज़माना था कभी

दो

ये बहाना वो बहाना
आपका अक्सर न आना

आप जिसमें कुछ नहीं हैं
वो फ़साना क्या सुनाना

बस मुझे महसूस करके
क्या लगा मुझको बताना

याद क्यों अक्सर रहा जो
चाहता हूँ भूल जाना

खा चुका हूँ आपसे जो
आप वो धोखा न खाना

इतिहास एवं दर्शन शास्त्र में स्नातक । कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन - प्रमुखतः सेतु आनलाईन पत्रिका (पिटसबर्ग अमेरिका से प्रकाशित) , वागर्थ , पाखी , कथाक्रम, विभोम - स्वर , गाँव के लोग , हिमप्रस्थ , शब्दिता , संकल्प समेत अनेकों रचनाएँ , पच्छिम दिशा का लंबा इंतजार (कविता संकलन) जब जँगल नहीं बचेंगे (कविता संकलन), मुआवजा (कहानी संकलन) संपादन - प्रभुदयाल बंजारे के कविता संकलन " उनका जुर्म " संपर्क
keshrimahesh322@gmail.com

महेश केसरी

एक जैसे दु:ख

बाहर की गर्मी और तपिश देखकर ही लोगों के पसीने छूट रहे थे। पारा पैंतालिस के पार चल रहा था। पशु - पक्षी, चिड़ियाँ -चुग्गे सब ईश्वर से प्रार्थना कर रहें थें, कि जल्दी से बारिश हो और पारा कुछ नीचे गिरे। लेकिन जयवर्धन सुबह से ही काम में जुटा हुआ था। रेत को बोरियों में भरकर दो तल्ले पर धीरे - धीरे चढ़ा रहा था।जयवर्धन, साठ साल से कम का नहीं है। इतनी उम्र तक तो लोग रिटायर होकर घरों में सुख - सुविधा के मजे उड़ाते हैं। जयवर्धन को उसके बच्चों ने घर से निकाल दिया है। जवानी में जयवर्धन हट्टा- कट्टा था। पैसे कमाता था तो जमकर खाता भी था। अब हड्डियों का केवल ढाँचा ही बचा है। वैसी खाली इमारत जो कभी भी ढह सकती है।

जुगल ठेकेदार रेत की धीमी ढुलाई से खीज गया था। मजदूरों को उसने ठेके पर लगाया था। काम को तीन दिनों में खत्म होना था।लेकिन किसी तरह वो दो दिनों में ही काम को निपटाना चाह रहा था। ताकि कुछ ज्यादा पैसे वो बचा सके। जुगल ने जयवर्धन को डपटा - " अबे , थोड़ा जल्दी- जल्दी पैर चला। इस तरह से सीढ़ियाँ चढ़ेगा तो हफ्ते भर में भी काम खत्म नहीं होगा।" जयवर्धन गमछे से पसीना पोंछते हुए बोला - " हाँ बाबू अभी जल्दी करता हूँ। बस तुरंत अभी खत्म करता हूँ।"

स्टेन साहब से रहा ना गया।वो, जुगल से बोले - " अरे भाई, सुबह से वो बेचारा इतनी गर्मी में काम कर रहा है। कम - से - कम उसे कुछ खाने के लिये तो पूछ लो। आखिर वो भी तो आदमी है। हमारी - तुम्हारी जब इतनी भीषण गर्मी से जान निकल रही है। तो क्या वो इंसान नहीं है? वो , बिना कुछ खाये -पिये खटे जा रहा है। जाओ उसे कुछ खाने को दो और कुछ देर आराम करने को कहो ।"

जब जुगल ने कुछ नहीं कहा तो , स्टेन साहब ने अपनी तरफ से जयवर्धन को आवाज दी - " जयवर्धन ....अरे भाई जयवर्धन तुम कब तक काम करते रहोगे यार। उन्होंने जेब से एक सौ रूपये का नोट निकाला और सामने के होटल की तरफ इशारा करते हुए बोले। जाओ रे भले मानस उस होटल से कुछ खाकर आओ। काहे फोकट में जान देने पर तुले हो भाई ....जाओ।"

स्टेन साहब करोड़ों की कोठी और कई शापिंग कांपलेक्स के मालिक थे। लेकिन बेटा सात समंदर पार विदेश में अपने बच्चों के साथ रहता था। वो भी साठ के करीब ही थे। अचानक जयवर्धन का दु:ख उन्हें अपना ही दु:ख लगने लगा था। और वो भीतर - ही भीतर कहीं रीतने लगे थें और, ठेकेदार सारा माजरा समझने के चक्कर में था। वो उजबकों की तरह अपने मालिक स्टेन साहब को घूरे जा रहा था।

अहमदाबाद, भारत में निवास, गुजरात शिक्षा परिषद् से अप्व्काश प्राप्त शिक्षिका, कई आलेख, कहानियाँ, व्यंग एवं कवितायेँ प्रकाशित
ई -मेल - jbirmiin@gmail.com

जयश्री बिरमी

लोकशाही

"आधी रात को ज़ोर ज़ोर से गाना बजाना तुम्हार हक हैं किंतु आपके पड़ोसियों को भी आराम से सोने का हक़ हैं। अनुकूलन के साथ रहना लोकशाही में अनिवार्य हैं।"

एक ज़माने में पूरी दुनियां में राजा रानियों का राज था। सभी देशों में राजाओं का शासन था, और लोग उनकी प्रजा थे। कई राजा बहुत महान थे जो अपनी प्रजा के सुख दुःख का खयाल रखते थे, उनकी समस्याओं को जानने के लिए रात को भेष बदल कर गलियों में उनके साथ बैठते थे, क्योंकि अगर अपने असली रूप में उनके सामने आयेंगे तो लोग अपनी सही राय देने से कतराएंगे। फिर उनके दुःख दर्द की समस्या को हल करने की कोशिश की जाती थी। और अगर राजा सनकी होता था तो उसकी सनक की वजह से प्रजा को बहुत कुछ सहना पड़ता था। कभी कभी तो वे बहुत ही अत्याचारी भी होते थे तो प्रजा बहुत दुःखी हो जाती थी। और उसके बाद विदेशी शासकों के बारे में तो कुछ पूछो ही मत, देश को लूट खसोट कर उसका आर्थिक, मानसिक, सांस्कृतिक हरेक तरीके से दोहन कर अपाहिज सा बनाया और जाते जाते कुठराघात करते गए जो आज तक हम भुगत रहें हैं।

और फिर पूरब से आज़ादी का सुनहरी सूरज का उदय हुआ और हम गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुए। आजादी आई साथ में लोकशाही लाई, जिसमे जनता की सरकार,जनता के द्वारा जनता के लिए– *Government of the people, by the people and for the people*, जैसे अब्राहम लिंकन ने अपने भाषण में कहा था। लेकिन ये जो नीव रखी गई थी लोकशाही की वो कुछ मतलबी

नेताओं के लिए आशीर्वाद बन गई और देश में अफसरशाही ने घर कर लिया, गरीबी और अराजकता ने देश को लिया और अज्ञानता ने देश को घेर लिया। कई समाज सुधारक आए जो वाकई में देश में सकारात्मक सुधार लाना चाहते थे और काफी सुधार हुए भी। किंतु हमने लोकशाही को स्वच्छन्दता समझा और सब अपने अपने हिसाब से लोकशाही का अवमूल्यन करने लगे। जो राजनीतिज्ञ थे वो अपनी ताकत बढ़ाने के लिए गुटबाजी पर उतर आए, अपनी वर्ण व्यवस्था को जातिवाद बना खूब उपयोग में लाए।सब राजा नहीं बन सकते, सब राज भी नहीं कर सकते किंतु सब अपने आप को राज करने में समर्थ समझने लगे, राजा भोज हो तो फिर ठीक पर गंगू तेली कैसे राज करना सीखेगा, महत्वकांक्षाएं खूब बढ़ी और राजा बनने की होड़ में सभी प्रकार के अनाचार बढ़ गए, जो दिल में आए करना, किसी की भी राजकीय बेईज्ज़ती कर अपना स्थान मजबूत करना और पता नहीं क्या क्या।

तोता चश्म बन गया, नेता का मत लेने चुनाव के समय आना फिर मैं कौन तुम कौन? सफल लोकशाही के लिए मतदाता का भी परिपक्व होना जरूरी है, थोड़े से लालच में अपना बहुमूल्य मत को बेच कर पांच सालों तक अन्याय सहना ये नासमझी की निशानी ही है। कहीं पढ़ा था, एक महिला बीच सड़क छाता लहराती मस्ती से चल रही थी और खुद लोकशाही में जी रही थी उसका प्रमाण दे रही थी किसी ने टोका भी कि वहां तो गाडियां चलती हैं उसे फुटपाथ पर ही चलना चाहिए किंतु वह टस से मस नहीं होते हुए वही चलती रही। ये क्या सही में लोकशाही हैं। नहीं लोकशाही में तुम्हारे जितने हक हैं वह दूसरों के भी हैं, अपना हक लेने के समय दूसरे के हक का भी ध्यान रखना चाहिए, बीच सड़क चलके तुम दूसरों के हक को नहीं मार सकते।

आधी रात को ज़ोर ज़ोर से गाना बजाना तुम्हार हक है, किंतु आपके पड़ोसियों को भी आराम से सोने का हक़ है।अ नुकूलन के साथ रहना लोकशाही में अनिवार्य हैं।

त्याग और शहीदी से पाई हुई आज़ादी,जो एक अनमोल चीज है, जिसकी कद्र न हमने जानी और न ही अपने बच्चों को कद्र करना सिखाया। इस देश के विकास और प्रगति के लिए हमें भी प्रयास करना चाहिए न कि हर बात में हक़ के लिए सोचें। देश को समृद्ध बनाना है तोउसके पर्यावरण का भी खयाल रखना चाहिए। कुदरती स्त्रोतों का जतन करना चाहिएं। पानी जो एक कुदरत की पवन देन हैं संसार को, उसका सही मात्रा और जरूरत के हिसाब से ही उपयोग में लेना चाहिए। जब हम देश से कुछ चाहतें हैं तब हमने इस देश को क्या क्या दिया ये सोचना अति आवश्यक है।

ये सब बातें अपने बच्चों, यानि कि भविष्य के नागरिकों को सिखानी अति आवश्यक हैं।

रामस्वरूप दीक्षित

मूलतः व्यंग्यकार। कविताएँ व लघुकथाएं भी लिखते हैं। अब तक दो व्यंग्यसंग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित। कुछ रचनाओं का बुंदेली , अंग्रेजी , गुजराती , कन्नड़ व पंजाबी में अनुवाद। मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन की प्रांतीय कार्यकारिणी के सदस्य। संपर्क - *ramswaroopdixit@gmail.com*

अलमारियों की दुकान

"सुना है कि इनका लक्ष्य एक हजार अलमारियों को अपने शो रूम में सजाकर रखने और इस रिकॉर्ड को गिनीज बुक में दर्ज कराने का है।"

अलमारियों के बाजार में उनकी तूती बोलती है। इस समय बाजार में सबसे बड़ी दुकान के मालिक हैं वे। अलमारियों के थोक और खुदरा विक्रेता।

वे इस बाजार के अलग तरह के व्यापारी हैं। जहां छोटे दुकानदार खुद अलमारियां बनाने जैसे मेहनती और उबाऊ काम में खुद को दिनरात खपाये रखकर सालभर में एक या दो बढिया और मजबूत अलमारियां ही बना पाते हैं , वहीं ये हर महीने दो या तीन बढिया सी चमचमाती हुई अलमारियां दुकान में सजा लेते हैं। इससे जहाँ दूसरों की दुकानें खाली दिखती रहती हैं , इनकी दुकान हमेशा भरी रहती है।

दरअसल ये अलमारियों के मैन्युफैक्चरिंग जैसे उबाऊ काम से खुद को मुक्त रखते हैं। वो काम ये भरपूर पैसे देकर दूसरों से कराते हैं , बस उन पर रंगरोगन कर अपनी कम्पनी का लेबल लगाने का काम भर ये करते हैं , जो इतना चमकदार और आकर्षक होता है कि बेहद कमजोर 26 गेज के हाथ लगाते ही पटपटाते हुए चद्दर के बाबजूद इनकी अलमारियां दूसरों की खुद की 18 गेज की मजबूत अलमारियों से भी ज्यादा चमकदार व सुंदर दिखाई देती हैं। जहाँ छोटे दुकानदार क़्वालिटी के भरोसे रहते हैं , वहीं ये इनकी मार्केटिंग की कला में इतने माहिर हैं कि देखते ही देखते देश - विदेश में इनकी अलमारियों की धूम मच जाती है ।

मगर फिर भी ये दुःखी हैं कि इतनी बड़ी दुकान के बाबजूद कोई न तो इनकी अलमारियों को खरीदता ही है न इन्हें दुकानदार मानने को तैयार है।

बाजार कितना भी सयाना हो जाये सयाने ग्राहकों को वो झांसा नहीं दे सकता।

सुना है कि इनका लक्ष्य एक हजार अलमारियों को अपने शो रूम में सजाकर रखने और इस रिकॉर्ड को गिनीज बुक में दर्ज कराने का है। आजकल हर महीने अलग अलग लोगों को कम से कम पांच अलमारियाँ बनाने के ऑर्डर दिए जा रहे हैं।

इनके यहां सिंगल डोर , डबल डोर , लॉकर वाली , बिना लॉकर वाली हर तरह की अलमारियाँ आपको घटी दरों पर मिल जाएंगी। कुछ अलमारियों के रंग बाहर से गुलाबी और भीतर से नीले मिलेंगे। ये विशेष ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए

विशेष तरह के लोगों से बनवाई जाती हैं।
इन ग्राहकों के आने पर शो रूम के भीतरी भाग में बने अतिथि कक्ष में इनका विशेष तरह से स्वागत भी किया जाता है।
इस स्वागत से प्रभावित कुछ ग्राहक एक से अधिक बार शो रूम में आते हैं और इनकी बेहद कमजोर अलमारियों को टिकाऊ बताकर इनके द्वारा हाल ही में स्थापित गए " अलमारी सम्मान " को झटक लेते हैं।
दरअसल इधर कुछ दिनों से इन्होंने ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए अलमारी वीर , अलमारी रत्न , अलमारी भूषण , अलमारी मार्तण्ड , अलमारी श्री , अलमारी पुरोधा व अलमारी वैभव जैसे अलंकरण व सम्मान देने की गौरवशाली परंपरा प्रारंभ की है , ये सम्मान उन्हीं को दिए जाते हैं जो इनके शोरूम का नियमित भ्रमण करते हैं और विशेष सम्मान उन्हें दिए जाते हैं जो इनका विशेष आतिथ्य स्वीकार करते हैं। तो मित्रो अलमारीयों का धड़ाधड़ बनना व उनका रंगरोगन व नामकरण का काम जोरों पर है।
कभी कोई पढा लिखा ग्राहक जब इनकी किसी अलमारी की विशेषता पूछता है तो ये पहले तो उसे टालते रहते हैं फिर उसे बनाने वाले से फोन पर पूछकर वो जो बताता है वो ग्राहक को बता देते हैं।

ग्राहक को दाल में कुछ काला नहीं पूरी दाल ही काली दिखाई देने लगती है।
लोकतंत्र में क्वालिटी का नहीं क्वांटिटी का महत्व है और इस मामले में इन्होंने अलमारी बाजार में सबको पीछे छोड़ दिया है।
अलमारी बाजार के ये बेताज बादशाह हैं।
इधर इन्होंने एक अच्छा काम शुरू कर दिया है , अलमारियाँ बिकती न देख उन्हें देश - विदेश की लाइब्रेरियों को दान करना शुरु कर दिया है।
दान की बछिया के दांत आज भी शायद लोग नहीं देखते , यह बात तो ये भी जानते ही हैं।

दुबई में एसोसियेट प्रोफ़ेसर के पद पर कार्यरत, हिंदी और मराठी में साहित्य सृजन, दुपाई, अबुधाबी, दिल्ली, जयपुर इत्यादि के प्रतिष्ठित मंचों से काव्यपाठ। एक काव्य संकलन प्रकाशाधीन है। संपर्क -n_upadhye@yahoo.com

नितिन उपाध्ये

चरित्र प्रमाण पत्र

हर बार जैसी रविवार की सुबह आज भी आलस की चादर ओढ़कर आई थी। उठने में थोड़ी देर हो गई थी। बैठक में मेज पर चाय का एक जूठा कप रखा हुआ था। अब आप यह मत सोचिये कि मैं किसी अपराध स्थल का मुआयना कर रहा था। सिर्फ यह देखने की कोशिश कर रहा था कि रीमा ने चाय पी ली है या नहीं। पर लगता है कि वह चाय पीकर सुबह की सैर के लिए कालोनी के बगीचे में गई है। अब मेरे पास उसके वापस आने की प्रतीक्षा करने के सिवाय कोई चारा ही नहीं था। आज तो बच्चों की भी छुट्टी है, तो रीमा आराम से ही वापस आएगी। पर तभी अचानक दरवाजा ठेलकर रीमा अंदर आई और आते आते वहीं से कहने लगी "मुझे अभी नीचे लेखा की

> "रीमा का पारा चढ़ गया और मुझे एक ही वाक्य में अपना निर्णय सुना दिया "आप अभी सान्याल साहेब को फ़ोन करके बता दीजिये कि आप इस बोर्ड मीटिंग में नहीं जा रहे।"

नौकरानी मिली थी और बता रही थी कि लेखा कल पूरे सप्ताह के लिए गोवा में होने वाली कम्पनी की वार्षिक बैठक में जा रही है ? आप भी तो वही जा रहे है न ? और कौन कौन जा रहा है ?" दुश्मनों की मिसाइलों की तरह उसके प्रश्न मेरे आत्मविश्वास के दुर्ग को ढहा रहे थे। मैंने मानवीय कानों की श्रवण-सीमा से परे वाली आवृत्ति में

"सिर्फ हम दोनों" कहने का असफल प्रयास किया। पर मक्खी के पंखों का कम्पन भी और जो मैं नहीं भी कहता वह सुन लेने वाली वाली, मेरी धर्मपत्नी के कानों तक यह बात जाने से, मैं तो क्या, परमात्मा भी नहीं रोक सकता था।

सिर्फ मैं और लेखा ही इस यात्रा पर जा रहे हैं, यह सुनकर

रीमा का पारा चढ़ गया और मुझे एक ही वाक्य में अपना निर्णय सुना दिया "आप अभी सान्याल साहेब को फ़ोन करके बता दीजिये कि आप इस बोर्ड मीटिंग में नहीं जा रहे।"

कम्पनी की कालोनी में रहने के भले ही दस फायदे हो, पर नुकसान भी कम नहीं। घर वालों से कोई बात छुपी नहीं रहती और घर की बात सभी सहकर्मियों को पता चल जाती है।

मैंने भी बात टालने के लिए कहा, "हां थोड़ी देर मैं फ़ोन कर देता हूं, पहले एक कप गरमागरम चाय तो पिलाओ।" रीमा कुछ कहती उसके पहले ही उसकी नज़र दरवाज़े से आती पूनम पर पड़ गई, और प्रक्षेपात्र का रुख उसकी तरफ मुड़ गया । "पूनम आज इतनी जल्दी ? अरे अभी तो बच्चे उठे भी नहीं है, अभी जो भी बनाओगी सब ठंडा हो जाएगा और बाकी के काम भी बचे रहेंगे"।

मुझे पूनम से जलन होती है कि कैसे उसके ऊपर अपनी मालकिन के गुस्से का कोई भी असर नहीं होता, काश मैं यह विद्या उससे सीख पाता। पूनम नव-वधु सी लजाती सीधे रसोई घर में चली गई। उसके इस असमय के लजाने से अचंभित रीमा उसके पीछे पीछे रसोई घर में चली गई और मैंने चैन की सांस ली। चाय का कहने उठा तो रसोईघर के दरवाजे पर ठिठक गया। अंदर मालकिन और नौकरानी नहीं, दो महिलाएं बाते कर रही थी। रीमा को ये कौतुहल था कि पूनम यूं शरमा काहे रही है, और पूनम अपनी ख़ुशी बताना चाहकर भी नहीं बताने का ढोंग कर रही थी।

"पूनम आखिर बोलो भी, क्या हो गया है, आज क्या ख़ास है ?"

"दीदी आज शम्भू हमको शहर ले जाने वाला है"

शम्भू हमारी कालोनी के विद्यालय की बस का ड्राइवर है और पास के ही स्टाफ-क्वॉर्टर्स में रहता है। अभी दो साल पहले ही अपनी ब्याहता पूनम को गांव से यहाँ ले आया है। हमारी कम्पनी शहर से बाहर है और सभी वर्ग के कर्मचारी इसी कॉलोनी में रहते हैं।

"अरे अभी तो कोई त्यौहार भी नहीं आ रहा। क्या किसी रिश्तेदार के यहाँ जा रहे हो ?" रीमा के कौतुहल की नदी अब अपने बाँध को तोड़कर बहना चाहती थी "नहीं दीदी, आज हमारी शादी को चार साल हो गए हैं, तो शम्भू मुझे शहर घुमाने ले जा रहा है। उसे स्कूल की बस भी सर्विसिंग के लिए देनी है। उसके बाद हम सिनेमा देखेंगे, फिर रामदुलारे की पूरी-सब्जी खाएंगे। फिर थोड़ा सा गंज में घूमेंगे, शाम को चौपाटी पर जाकर टिक्की-चाट-पानीपुरी खाएंगे और रात को डोसा खाकर बस लेकर वापस आ जायेंगे"

परीक्षा के पहले मन ही मन में रटे गए निबंध की तरह इन पंक्तियों को रीमा के सामने उगलकर

पूनम तो अपने आप को हल्का महसूस कर रही थी, पर यह सुनकर रीमा की आँखों से मेरे लिए चीनी ड्रैगन की तरह से निकलने वाली लपटें रसोईघर की दीवार को भेदकर मुझे जला रही थी। जानता था कि रीमा इस पल यही सोच रही होगी कि बस, अभी खड़े खड़े हमारी नई कार बिगड़ जाये और उसे सर्विसिंग के लिए मैं शहर ले जाऊ और वह भी सब वहीं मजे करे जो उसे पूनम ने जलाने के लिए बताये थे या बताकर जलाया था। शहर जाकर चाहे कितनी भी बार पांच सितारा होटल में ५ कोर्स डिनर करवा दो, किसी भी महिला को वह आनंद नहीं आता जो चौपाटी पर हाथ में दोना लेकर आख़री पानीपूरी गटकने की बाद मिक्स चटनी का पानी पीने में आता है।

अब तक रीमा एक आम सीरियलदर्शी महिला में तब्दील हो गई थी, और पूनम के उफनते हुए दूध से उत्साह पर पानी छिड़कते हुए यह कहने का प्रयास किया

"अरे पिछले सप्ताह तो यहीं ठ कर उसकी मार का निशान दिखाकर उसे जी भर के गालियां दे रही थी। एक ही सप्ताह में इतना प्यार ? "

पूनम तो जैसे अपनी ही रौ में थी, उस पर रीमा के व्यंग्यात्मक लहज़े का कुछ असर ही नहीं हुआ। कहने लगी

"अरे दीदी मरद जात है, थोड़ा बहुत गुस्सा तो सभी को आता है, और शम्भू तो बिलकुल अपने नाम जैसा भोला भंडारी है। दिल का बड़ा ही साफ़ है, पर जब गुस्सा आ जाए तो ऐसा तांडव मचाता है कि उसे संभालना कठिन हो जाता है। जब मुझे गाँव से शहर लाया था, साफ साफ कह दिया था कि तू तो मेरी भोली मैना है, और यहाँ शहर में सभी शिकारी। किसी भी गैर मरद के पास न जाना और न ही उन्हें अपने आस पास फटकने देना।"

रीमा ने पूछा "तो पिछले हफ्ते क्या हो गया था?"

" क्या बोलूं दीदी आपसे, उस दिन गली में एक रिक्शावाला आया था। वो मेरे भैया के ससुराल का था, तो बस उसने मुझे पहचान कर के आवाज़ दी, मैं भी उससे हाल-चाल लेने लग गयी। तभी शम्भू ने देख लिया। बस उसका पारा चढ़ गया। घर ले जाके अपने रौद्र रूप में आ गया। पर रात को मेरे लिए दवाई भी लाया था और अपने हाथों से लगाई भी थी। "

मैं रीमा की मन:स्थिति समझ रहा था।मैं ही उसे उसकी उच्च शिक्षा का हवाला देकर शहर अकेले जाने को कहता हूं। पिछले हफ्ते जब उसे मोच आई थी और उसने मुझसे मेज पर रखा मलहम माँगा था, जिसे मैंने बैठे बैठे ही उछाल दिया था। आज तो पूनम के जाने के बाद मेरी शामत का मैं सिर्फ अंदाज़ ही लगा सकता था।

रीमा को चुप पाकर पूनम का हौसला बढ़ गया था, वह *WWF* के मुक्केबाज की तरह दो चार दांव और दिखाना चाह रही थी, जो बाद में मेरे को ही लगने वाले थे।

"दीदी शम्भू तो मुझे सिर्फ लड़कों वाले घरों में भी काम नहीं करने देता। जब नायर मेम साहब जचगी के लिए मायके गई थी, तो मुझे बुलाकर कहा था, मेरे आने तक रोज आकर साहब का नाश्ता पानी औ दोनों समय का खाना बना दिया करना। वह तो पैसे भी ज्यादा दे रही थी, पर शम्भू ने कहा बिलकुल नहीं। मैं नायर साहब की नजर को अच्छे से जानता हूं।"

रीमा को घर बैठे बैठे इतनी मसालेदार खबर हाथ लगी थी, पर उसे तो जैसे कोई सरोकार ही नहीं था। एकदम से पूछने लगी “पर पूनम इन गर्मियों जब मैं बच्चों को लेकर बड़े भैय्या के पास अमेरिका गई थी। तब तो तुम रोज मेरे घर आती थी। तब शम्भू ने तुम्हे नहीं रोका।"

पूनम ने कहा " अरे दीदी कैसी बाते करती हो, भैया तो बिलकुल सीधे सादे इंसान है। शम्भू तो कहता है कि साहब जैसा देवता आदमी दुनिया तो क्या स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा। घर से सीधे दफ्तर जाते हैं और शाम को सीधा घर आते हैं। वह तो कहता है की कुछ भी काम हो साहब से बता दिया करो। दीदी ये चाय बन गई है, भैय्या को दे आऊं?"

रीमा ने कहा "तू रहने दे और अपने जाने की तैयारी कर, यह चाय मुझे दे"

मैं फटाक से बैठक में आकर कुर्सी पे बैठ गया। रीमा चाय के साथ बिस्किट भी ले आयी। चाय मेज पर रखने के बजाय हाथ में देते हुए बोली " सुनिए जी अब जब जाने की सब तैयारी हो गई है तो ऐन वक़्त पर मना करना भी अच्छा नहीं। आप सान्याल साहब को फ़ोन करके हां कह दें।"

---

४५ वर्षों से नियमित आपके सृजन, लगभग पाँच हज़ार काव्य रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी कई बार अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं । मुख्य कृतियाँ 'दरवाजे पर दस्तक',खट्टे मीठे रिश्तें (कहानी संग्रह),तुम मुझसे झूठ तो नही बोल रहे(उपन्यास) । राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्थाओं से लगभग २०० सम्मान व पुरस्कार प्राप्त।
ई -मेल - antriksh.sanjay@gmail.com

संजय वर्मा "दृष्टि"

माँ गंगा और माँ नर्मदा के मिलन का पावन स्थल :गंगा कुंड (गांगली)

इंदौर से मनावर १२७ किमी की दूरी पर मनावर जिला धार के अंतर्गत मनावर से २५ किमी की दूरी पर गांगली गांव स्थित है। ये कालांतर में गंगा से गांगली हो गया। ये नर्मदा के तट पर स्थित है। यहाँ पवित्र कुंड विधमान है। जिसमे निरंतर गंगा का जल प्रवाहित होता रहता है। इस जल की पुष्टि गंगा नदी के जल से की गई जिसको हूबहू जल का होना पाया गया। ये जल बहकर नर्मदा के जल में मिलकर मध्य में इसे सातमात्रा के नाम से भी पुकारा जाने लगा। यहाँ माँ गंगा और नर्मदा का मिलन होता है। यहाँ शिवलिंग भी है जो नंदिकेश्वर के नाम से जाना जाता है। प्राचीन स्थान का पुराण(स्कंद पुराण के रेवाखंड और शिव पुराण)में लेख है। पंडित प्रदीप जी मिश्रा ने होशंगाबाद

ये स्थल सरदार सरोवर के डूब क्षेत्र में आने से जब पानी नहीं रहता तब दर्शन श्रद्धालुओं के लिए सुलभ होते है यहाँ देश के सभी प्रांतो से गूगल मेप के जरिये स्थान खोज कर दर्शन का लाभ लेते है

जिले के से मरीहरचंद गाँव में कथा वाचन के दौरान मनावर का के नाम का उल्लेख किया था। यहाँ दशमी को भव्य मेला भी लगता है। गंगा दशहरे पर भारी भीड़ रहती है। ये स्थल सरदार सरोवर के डूब क्षेत्र में आने से जब पानी नहीं रहता तब दर्शन श्रद्धालुओं के लिए सुलभ होते है।यहाँ देश के सभी प्रांतो से गूगल मेप के जरिये स्थान खोज कर दर्शन का लाभ लेते है।

यहाँ पहुंचने के दो रास्ते है। एक सिंघाना गणपुर होकर एवं एक मनावर से पक्का डामर एवं सीमेंट रोड से सेमल्दा रोड़ पर वायल, पचखेड़ा होकर करोली फाटा आता है। वहाँ पर क्रांतिकारी टंटिया मामा की प्रतिमा से करोली फाटा से पिपलाज, के आगे से ग्राम

बीजाबयड़ी से होकर मात्र २ किमी की दूरी पर गांगली (साततलाई)में गंगा कुंड निर्मित है। कुंड में ऊपर से जाली लगी है ताकि कोई उसमे ना गिरे। कुंड में दूसरी और स्नान हेतु पेढ़िया बनी हुई है। ग्राम का नाम साततलाई में सात तलाई है जिसमे से दो तलाई में पानी भरा हुआ है। उसके समीप प्राचीन शिव मंदिर है। और उसी क्षेत्र में जागोद, बागोद दो शिव मंदिर है। जहाँ शुद्ध घी का भंडारा डेढ़ वर्ष तक चला था। दर्शनीय स्थल में माँ गंगा का माँ नर्मदा के जल में विलय होने का स्नान एवं दर्शन लाभ अवश्य लेना चाहिए।

पुस्तक - कुरुक्षेत्र
लेखक - रामधारी सिंह दिनकर
संस्करण - २०१९
प्रकाशक - राजपाल एण्ड संस
समीक्षक - यशवंत चौहान

यशवंत चौहान

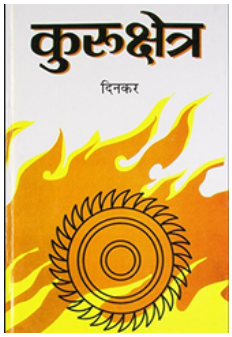

कुरुक्षेत्र कृति डॉ रामधारी सिंह दिनकर की हिन्दी साहित्य को अनुपम देन है । कुरुक्षेत्र में युद्ध और अनीति की जटिल समस्याओं का मानवीय विवेचन अद्भुत ढंग से किया गया है । दिनकरजी का यह प्रबंध काव्य अतीत से लेकर अनंत काल के लिए प्रासंगिक रहेगा । यदि उन्हीं के शब्दों में कहे तो मुझे अशोक के निर्वेद ने आकर्षित किया । युद्धों की विभीषिका मानव और मानवता दोनों को ग्रसित कर लेती है । इसलिए उन्होंने कहा हैं यह कथा युद्धान्त की है ।

प्रथम सर्ग में द्रोपदी के मन में उत्पन्न प्रतिशोधव्यथा कुछ इस तरह व्यक्त किया गया है - दाँत अपने पीस अंतिम क्रोध से / आदमी के गर्म लोहू से चुपड़ / रक्त वेणी कर चुकी थी केश की / केश जो तेरह बरस से थे खुले । द्वितीय सर्ग में युद्ध के उन्माद का चित्र उकेरा है - युद्ध का उन्माद संक्रमणशील है / एक चिनगारी कहीं जागी अगर / तुरत बह उठते पवन उनचास हैं / दौड़ती हँसती उबलती आग चारों ओर से । अत्याचार सहन करने की भी एक पराकाष्ठा है और क्षमा की भी । तृतीय सर्ग में उन्होंने कहा भी है क्षमा करने के लिए भी शक्तिशाली होना आवश्यक है - क्षमा शोभती उस भुजंग को / जिसके पास गरल हो / उसको क्या जो दंतहीन / विषरहित विनीत सरल हो । विसंगतियों पर कटाक्ष किया करने के लिए उन्होंने महाभारत के कथानक एवं पात्रों का सहारा लिया है । चतुर्थ सर्ग में - महाभारत नहीं था द्वंद केवल दो घरों का / अनल का पुंज था इसमें भरा अगणित नरों का / न केवल यह कुफल कुरुवंश के संघर्ष का था / विकट विस्फोट यह सम्पूर्ण भारतवर्ष का था । युद्ध अपने साथ अनेक कुसंगतियां भी लेकर आता है । पंचम सर्ग में देखिए - जब युद्ध में फूट पड़ी यह आग तो / कौन सा पाप नहीं किया तूने ? गुरु के वध के हित झूठ कहा / सिर काट समाधि में ही लिया तूने । नव युग के स्वप्न पलकों पर सजाए कवि षष्ठ सर्ग में कहता है - यह समय विज्ञान का सब भाँति पूर्ण समर्थ / खुल गये हैं गूढ़ संसृति के अमित गुरु अर्थ / वीरता तम को संभाले बुद्धि की पतवार / आ गया है ज्योति की नव भूमि में संसार । अंतिम सर्ग में राष्ट्र की व्यथा कुछ इस प्रकार व्यक्त हुई है - क्षत-विक्षत है भरत भूमि का / अंग-अंग बाणों से / त्राहि-त्राहि का नाद निकलता / है असंख्य प्राणों से ।

इस कृति में काव्य शिल्प के विविध रुप दृष्टिगोचर होते हैं । कुरुक्षेत्र साहित्य जगत और इस राष्ट्र की चेतना के लिए सदैव ही प्रासंगिक है ।

पुस्तक - एक गधा चाहिए (हिंदी व्यंग्य-संग्रह)
लेखिका - डॉ. दलजीत कौर
प्रकाशक - डेटालाइन पब्लिशर, चंडीगढ़
समीक्षक -प्रो. नव संगीत सिंह

प्रो. नव संगीत सिंह

डॉ. दलजीत कौर हिन्दी की एक जानी-पहचानी लेखिका हैं। उन्होंने 'हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य' के विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से पीएचडी प्राप्त की है। लगभग स वर्ष अध्यापन के बाद, वह अब स्वतन्त्र (फ्रीलान्स) लेखिका हैं। उनकी रचनाएं अक्सर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। उन्होंने दो पंजाबी पुस्तकों सहित विभिन्न विधाओं में दस पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

समीक्षा हेतु पुस्तक डॉ. दलजीत कौर का एक व्यंग्य- संग्रह है, जिसमें कुल ३५ व्यंग्य शामिल हैं। उनके ज्यादातर व्यंग्य, पुस्तक रूप में प्रकाशित होने से पहले पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और उनमें से कुछेक को पंजाबी में (मेरे द्वारा) अनुवाद किया गया है।

पुस्तक के सभी व्यंग्य आसपास के माहौल और समाज के बदसूरत चेहरे को उजागर करते हैं। लेखिका ने बहुत पैनी दृष्टि से हर स्थिति का अवलोकन किया और फिर उसे अपनी कलम के माध्यम से तीव्र कटाक्ष द्वारा प्रस्तुत किया।

पुस्तक का शीर्षक व्यंग्य 'एक गधा चाहिए' साहित्यकारों द्वारा पुरस्कार/ सम्मान हासिल करने के लिए प्रयुक्त किये जाते घटिया क़िस्म के तौर-तरीकों से संबंधित है। 'सम्मान में मिला सामान' में लेखिका ने स्पष्ट किया है कि वास्तव में सम्मान में दिए जाने वाले- शाल, स्मृति चिन्ह, प्रशंसापत्र, धन-राशि की कीमत सम्मानित होने वाले लेखक से पहले ही वसूल कर ली जाती है। (मुझे याद आया कि २००४ में मुझे भी ऐसा ही एक सम्मान मिला था, जिसके लिए संबंधित संस्था ने हर एक सम्मानित होने वाले लेखक से 200/- प्रति व्यक्ति रिफ्रेशमेंट्स के लिए जमा करवाए थे। लेकिन जब मैं रात में ट्रेन द्वारा दूसरे राज्य में सम्मान लेने पहुंचा तो वहां रिफ्रेशमेंट के नाम पर सिर्फ एक कप चाय थी, जो उन दिनों पांच रुपए में मिल जाती थी। इकट्ठे किए रुपए तो घटिया क़िस्म के मोमेंटो देने या फिर मुख्य अतिथि की बुकिंग के लिए थे। बहरहाल...) 'आर्ट आफ टाक' में डबल मानक खेलने वाले साहित्यकारों पर कटाक्ष है, जो एक ओर तो किसी से सम्मानित होने वाले लेखक की जोर-शोर से निन्दा करते हैं, वहीं दूसरी ओर उसी सम्माननीय लेखक को बधाई देते हैं। 'प्रसिद्धी का बुखार' में लेखकों द्वारा समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, फेसबुक के माध्यम से ख़ुद का गुणगान किया जाता है, यहां तक कि किसी से लिखवाई समीक्षा अपने नाम पर छपवाई जाती है। 'प्रेमचन्द की वापसी' में बताया गया है कि लेखक की प्रतिभा कोई मायने नहीं रखती, बल्कि उसका

'जुगाड़ी' होना आवश्यक है। यानी वह या तो विदेशी हो, या ऊंचे ओहदे पर हो, या फिर किसी नेता/मंत्री/अध्यक्ष का निकटवर्ती हो।

'हो गई आंखें चार' में चश्मा (ऐनक) पहनने/ न न पहनने के तर्क को बहुत ही व्यंग्यात्मक शैली में दर्शाया गया है। 'कुछ तो करो ना' में कोरोना की भयानक महामारी के दौरान देश के लोगों की अंध-भक्ति/अंध-श्रद्धा/अंध-विश्वास को निशाना बनाया गया है। हमारे देशवासी इस बीमारी को थालियां बजाकर या मोमबत्तियां जलाकर भगाने की कोशिश करते रहे। कोरोना अवधि के दौरान सभी लोगों की ज़बान पर सिर्फ कोरोना का ही ज़िक्र रहा, जैसे कि कोई अन्य समस्याएं ही न रहीं हों! 'साथ चलेंगे शमशान तक' में लोक-दिखावे के लिए अंतिम संस्कार के लिए श्मशान घाट तक जाना आवश्यक दर्शाया है। 'बत्ती गुल' अपने वाहनों से लाल/नीली बत्ती को हटाने के बाद उच्च अधिकारियों की दशा के बारे में है। अधिकारियों के बच्चे बत्ती वाली गाड़ी में बैठ कर ही स्कूल जाना चाहते हैं, ताकि अन्य बच्चों पर उनका प्रभाव पड़े! 'मत आना अतिथि' भी कोरोना संकट के दौरान घर आने वाले मेहमानों को रोकने के बारे में है। हालांकि भारतीय संस्कृति में अतिथि को एक देवता के रूप में सम्मान दिया जाता है, लेकिन कोरोना के समय लोगों ने अपने घरों के दरवाजों पर लिखवा लिया था- 'कृपया हमारे घर न आएं...।'

इस प्रकार इस संग्रह की बाकी व्यंग्य-रचनाओं में सामाजिक घटनाओं को तंज़ की दृष्टि से देखा गया है। डॉ. दलजीत कौर द्वारा लिखित साहित्य (काव्य-संग्रह, बाल-कविताएं, कहानी, लघुकथा

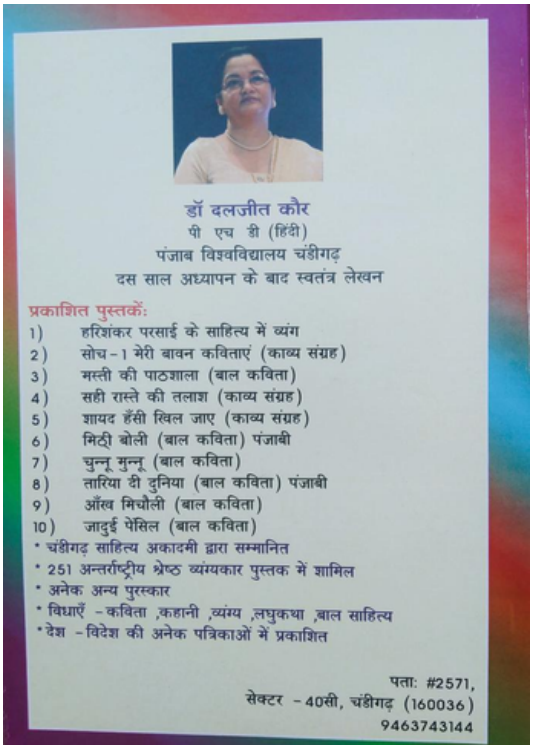

अनुसंधान आदि) में नई विधा व्यंग्य का शामिल होना शुभ संकेत है। 'इक्कीसवीं सदी के अंतर्राष्ट्रीय श्रेष्ठ व्यंग्यकार' में उनकी रचना को स्थान मिलना वाकई गौरवान्वित बात है! डॉ. कौर के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं!

गुरबचन का शब्द -जाल

बा	र	ह	सिं	गा	की	र	हा
कं	ग	थ	श	य	शे	गा	ल
गा	ल	भे	ड़ि	या	रा	म	चा
रु	भा	लू	ला	ची	सु	अ	र
सां	डा	री	ल	सी	ता	खा	पां
घो	प	का	ह	हा	थी	ड	डा
गि	ल	ह	री	ल	रा	प	स
च	म	गा	द	ड़	गि	ऊँ	ट

ऊँट, कंगारू, गाय, गिलहरी, चमगादड़, चीता, नेवला, पांडा, बारहसिंगा, भालू, भेड़िया, शेर, सूअर, हाथी, हिरण,

बस्ती , उ. प्र. में निवास, देश-विदेश की राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में 500 से अधिक कविताएं, कहानियाँ, समीक्षाएँ, बाल साहित्य प्रकाशित , आधा दर्जन से अधिक पुस्तकों का संपादन।
'नव किरण' मासिक पत्रिका एवं 'बाल किरण' मासिक पत्रिका का संपादन।
संपर्क -laldevendra204@gmail.com

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

सुंदर वन का मेला

सुंदर वन में ये ऐलान हुआ,
हर माह लगेगा सुंदर मेला।
खाने-पीने की सामग्री होगी,
फलों का सजा रहेगा ठेला।

मेले के दिन ढेरों लग गई,
सुंदर सजी-धजी दुकान।
लोग उमड़ पड़े खरीदने,
अपने पसंद के सामान।

बंदर और बंदरिया बेच रहे,
चाट पकौड़ा मस्त कचालू।
चिल्ला-चिल्ला कर बेच रहे,
रंग-बिरंगे गुब्बारे भालू।

खुश होकर बिल्ली बेच रही,
प्यारे सुंदर से बहुत खिलौने।
तेज आंधी के दिखे आसार,
खिलौने बिके यूँ औने-पौने।

मेले में बढ़ने लगी खूब भीड़,
जहाँ पे लगा सर्कस व झूला।
मेले में अचानक आ गया शेर,
वो दहाड़ा होकर आगबबूला।

मेले में शेर की दहाड़ सुनकर,
जानवरों में मच गई भगदड़।
मारे डर कर सब लगे भागने,
हड़बड़ में सब हुई गड़बड़।

जान बचाकर सभी जानवर,
छोड़ भाग गए अपना ठेला।
मैं राजा हूँ, इस सुंदर वन का,
बिन आर्डर क्यूँ! लगा मेला।

———————

कला

धर्मेन्द्र राठौर

श्री धर्मेन्द्र राठौर भारत के एक प्रतिष्ठित कलाकार हैं। श्री राठौर वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय के नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट के सदस्य एवं ICCR के ज्यूरी मेम्बर हैं। वे विश्व स्तर पर अपनी कार्यशैली के लिए प्रसिद्ध हैं। वे दिल्ली कॉलेज आफ आर्ट्स, राजस्थान ललित कला अकादमी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, सिविल सेवा अधिकारी संस्थान, नई दिल्ली पाथवेज स्कूल, शिक्षा भारती से भी जुड़े हुए हैं । इनकी कलाकृतियाँ - ग्लेनबारा कला संग्रहालय, जापान, वोल्गन यूनिवर्सिटी ऑफ ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क, सिंगापुर, मॉरीशस, जर्मनी के दूतावासों, नई दिल्ली, साहित्य कला परिषद, कॉलेज ऑफ आर्ट, नेशनल ललित कला अकादमी, डीएलएफ, ताज होटल, मौर्य शेरेटन होटल, हिमाचल फ्यूचरिस्टिक, हीरो साइकिल और हीरो होंडा, देवू, अपोलो टायर्स, सैमसंग, पुंज समूह, बिड़ला समूह, जिंदल समूह, ओएसिस कम्युनिकेशंस, यू.पी.एस.सी., राज्य बैंक ऑफ इंडिया, भारत, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, में संगृहीत हैं ।

मनोरंजन

"हाउस ऑफ़ ड्रैगन्स "

गेम ऑफ़ थ्रोंस देखना ज़रूरी नहीं है

मनीष श्रीवास्तव, बोस्टन

जॉर्ज आरआर मार्टिन की दुनिया एक बार फिर हमारी स्क्रीन पर वापस आ गयी है। "गेम ऑफ़ थ्रोन्स" के आठवें सीजन के आखिरी एपिसोड के बाद का हर रविवार जो इस माईथोलॉजिकल सीरीज के दीवानों के लिए सूना हो चला था उसे "हाउस ऑफ़ ड्रैगन्स" ने फिर से इंतज़ार करने योग्य बना दिया है। इसका पहला एपिसोड धमाकेदार तो है ही साथ ही साथ उतना ही मनोरम भी है। एक एक पात्र ख़ूबसूरती से लिखा गया है। एक घंटे के लिए, यह हर उस चीज के माध्यम से घूमता है जिसने पहले आये इसे सीक्वल "गेम ऑफ थ्रोन्स", छोटे पर्दे पर इतिहास रचा। पूरे एपिसोड का हर दृश्य आपको बंधे रहने पर मजबूर करता है। अगर आप मेरी तरह "तिलस्मी" दुनिया के दीवाने हैं तो " "हाउस ऑफ़ ड्रैगन्स " आपके लिए ही है। और हाँ अगर आपने गेम ऑफ़ थ्रोन्स के आठों सीज़न नहीं देखें है तो भी ये आपके लिए है। किरदार नए, कहानी नयी पर दुनिया वही।

अंततः

"ज़्यादा देर नहीं लगती"

सुनयना काचरू

पुरुस्कृत कवि, फ़िल्म लेखक, निर्माता, गीतकार एवं स्तंभकार। देश विदेश के कई सम्मानित मंचों पर काव्य पाठन। इनके लिखे गीत सोनू निगम, शंकर महादेवन, अली सेठी और अनुराधा पालाकुरती जैसे कलाकारों ने अपने बोल दिए। हिंदी काव्य संग्रह, वक्त से परे एवं अंग्रेजी काव्य यावं लघु कथा संग्रह "सनी साइड अप" प्रकाशित। संपर्क -

हिंदी क्लब आफ इलिनॉय ने मनाया आजादी का अमृत महोत्सव

आजादी के महोत्सव के रंग रचनाकारों के संग।

हिन्दी क्लब ऑफ़ इलिनॉय द्वारा फ़ेस्बुक लाइव कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ कार्यक्रम का शुभारम्भ क्लब के सचिव श्री विजय चोपड़ा ने आज़ादी के अमृतमहोत्सव पर आयोजित इस विशेष कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। हिंदी क्लब की संस्थापिका श्रीमती गुरबचन कौर ने हिंदी क्लब एवं मासिक पत्रिका " दृष्टि" के बारे में जानकारी देते हुए सभी रचनाकारों का स्वागत किया। हिंदी क्लब की सांस्कृतिक मंत्री डॉक्टर निशा पण्ड्या ने अमृतमहोत्सव की बधाई देते हुए कार्यक्रम का आग़ाज़ किया। भारत और \ अमेरिका से भी रचनाकारों ने कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। कवि गिरीश विद्रोही के संचालन में गीतकार विष्णु सक्सेना, डा. ज्योत्स्ना जी, नितू बाफना, भरत त्रिपाठी, सूर्य प्रकाश दीक्षित, डा.निशा पंडया, कृष्ण कान्त ने काव्यपाठ किया। क्लब अध्यक्ष गुरबचन कौर नीलम और सचिव विजय चोपड़ा ने अंत में सफल आयोजन की सभी को बधाई दी एवं धन्यवाद ज्ञापित किया ।

- डॉक्टर निशा पण्ड्या

लघु कथा के रंग नीलम के संग

|

HINDI DIVAS 2022 COMPETITIONS

12th YEAR ANNIVERSARY

AN ONLINE CELEBRATION

Saturday, September 17, 2022 Starting 11:00am Central

PARTICIPANT NAME: KID/ADULT AGE, IF KID:

PHONE: EMAIL:

CATEGORY (Please check): _ ELOCUTION, _ DANCING, _ DRESS TO IMPRESS, _ KAVITA PAATH

CATEGORIES FOR COMPETITIONS:

KIDS

1. ELOCUTION Topic: भारत का अमृत महोत्सव TIME: 3 minutes, AGE: 11 to 14 years
2 . DANCE: On Bollywood Patriotic Songs only TIME: 5 minutes AGE: 8 to 14 years
3. DRESS TO IMPRESS : महान भारतीय विभूतियों की वेशभूषा पर TIME: 3 minutes, AGE: 5 to 9 years

ADULTS (16 YEARS AND OLDER)

1. ELOCUTION Topic: महिलाएँ और समाज नव निर्वाण TIME: 4 minute
2. KAVITA PAATH Topic: अमृत महोत्सव TIME: 4 minutes

RULES

2. Entry fee $15 for adults, $10 for kids, non-refundable, for each category, each participant. A person can participate in multiple categories.

3. Entry fee payable by ZELLE, email hindiclubil@gmail.com. For other payment options please call Gurbachan Kaur at 847 962 8595.

4. All presentations should be non-religious, non-political and worthy of family entertainment

4. After auditions of all entries top five in each category will perform live online on September 17, 2022 in front of a panel of esteemed judges.

5. Prizes: First, Second and Third place winners will be awarded $75, $50 and $35 and two $20 EA consolation prize for adults; for kids $50, $35 and $25 and two onsolation prize of $15 EA. Amazon Gift Cards respectively.

6. Send entries to email: hindiclubevents@gmail.com . last day send Sept.10,2022. Judges decision is Final.

ANY QUESTIONS? PLEASE CALL GURBACHAN KAUR 847 962 8595 OR VIJAY CHOPRA 708 704 7935

HINDI CLUB OF ILLINOIS

Advertise in online monthly Hindi magazine Drishti

2545 W. Devon Ave., Chicago IL 60659 USA

Website: www.hindiclub.org, Email: hindiclubevents@gmail.com

Phone: 847 962 8595

Founded in 2010 Hindi Club of Illinois (HCI) is a not-for-profit 501©(3) (registration no. 27-3553775) social club. Its objective is to promote Hindi language and Indian culture overseas. List of its ongoing activities include Hindi classes for kids and adults, a Hindi library, weekly, monthly and annual events. Since the current pandemic all its events are online including weekly short story reading, monthly programs and yearly Hindi Divas in September and Vishwa Hindi Divas in January. In January 2022 HCI started an online Hindi magazine titled Drishti. Because of its universal content, artful look and contemporary style the magazine has been very well received. This digital publication focuses on social, cultural and family values using the best in digital platform. We are gratified that its USA distribution has steadily grown to a current estimate of about 10,000 among Indian diaspora. All the copies of this magazine are available on HCI website www.hindiclub.org. We are pleased to invite Indian and American businesses and individuals to place their ads in this magazine to promote their business or services, and in turn also help us promote Hindi language and its culture overseas. You can use both video and digital print media for your ads in this magazine.

हिन्दी क्लब आफ ईलिनाए एक लाभरहित *501©(3) (registration no. 27-3553775)* संस्था है। इसका उद्देश्य विदेश में हिन्दी भाषा का प्रचार और प्रसार है।इसके अविरत कार्यक्रम बच्चों और बड़ों को हिन्दी सिखाना, हिन्दी पुस्तकालय, साप्ताहिक , मासिक और वार्षिक बहुत लोक प्रिय हैं।

जनवरी २०२२ से क्लब ने एक मासिक ऑन लाइन पत्रिका "दृष्टि" भी शुरू की है। इसके सार्वजनिक रुचिकर पाठ्यक्रम, कला शैली और आधुनिक आकार को लोगों ने बहुत सराहा है।इस संस्कृति, परिवार और साहित्य केन्द्रित डिजीटल पत्रिका का वितरण कुछ ही माह में बहुत अच्छी गति से बड़ रहा है। हमारा अनुमान है यह पत्रिका हर माह भारतीय समुदाय के कम से कम १०,००० लोगों में वितरित हो रही है। इस पत्रिका के पिछले सारे अंक हमारी वेबसाइट *www.hindiclub.org* पर उपलब्ध हैं।

हम बढ़े हर्ष से भारतीय और अमरीकी बिज़नस को इस पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए आमन्त्रित करते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से आपकी बिज़नस ही की बढ़ोतरी नहीं बल्कि हिन्दी भाषा की भी सेवा होगी। आपके ज्ञापन के ये इस पत्रिका में विडीयो और डिजीटल दोनों माध्यम की उपलब्धि है।

Name (Business/Individual):

Contact Person (Email/Phone):

Advertising Price per month, please check your choice:

O Full Page: $50.00O Half Page: $25.00 O Business Card: $10.00

O 30 second video ad: $100.00

Special offer: All advertisers who pay in advance for twelve months will get a 20 % discount.

Payment is accepted by Zelle, email hindiclubil@gmail.com or by check payable to Hindi Club of Illinois and mail to Hindi Club of Illinois 2545 W. Devon Ave., Chicago IL 60659. Contact Gurbachan Kaur at 847 962 8595 for charge card payments.

Regal Jewels
22KT GOLD 24KT GOLD
DIAMONDS
2625 W. DEVON AVE. CHICAGO, IL 60659
PH: 773-262-4377
WWW.REGALJEWELS.COM